उसका अनुग्रह काफी है

रविवार का उपदेश, 15 नवंबर, 2026

परमेश्वर और उसका अनुग्रह

हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी और सर्वव्यापी है। उसके गुण—उसका प्रेम, विश्वासयोग्यता, दया और सामर्थ्य—लगातार हमारे जीवनों को स्पर्श करते और रूपांतरित करते रहते हैं।

परमेश्वर के अनेक अद्भुत गुणों में से, जिन्हें जानने और अनुभव करने का हमें सौभाग्य प्राप्त है, परमेश्वर का अनुग्रह वास्तव में अद्भुत है, जैसा कि भजन में कहा गया है।

अनुग्रह क्या है?
* *अयोग्य होते हुए भी और बिना किसी कमाई के प्राप्त होने वाला अनुग्रह, प्रेमपूर्ण दया और सद्भावना। (उदाहरण: 'ग्रेस' अंक)

विश्वासियों के रूप में, हम इस सत्य से भली-भाँति परिचित हैं कि हम केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही विश्वास के द्वारा उद्धार पाए हैं (इफिसियों 2:8,9)।

आज, हम परमेश्वर के अनुग्रह के अन्य विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे और यह समझेंगे कि इस सत्य में जड़ पकड़कर हमारा जीवन किस प्रकार रूपांतरित हो सकता है।

हमारा परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी है

प्रभु स्वयं को अनुग्रहकारी परमेश्वर के रूप में प्रकट करता है।

निर्गमन 34:6
यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, "यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य,

उसका अनुग्रह असीमित है

वह समस्त अनुग्रह का परमेश्वर है।

1 पतरस 5:10

अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दु:ख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा।

न केवल परमेश्वर अनुग्रहकारी है, बल्कि वह इस बहुतायत के अनुग्रह को हम सभी के लिए उपलब्ध भी कराता है।

वह हमें और अधिक अनुग्रह देता है।

याकूब 4:6
वह तो और भी अनुग्रह देता है;

परमेश्वर के अनुग्रह की अभिव्यक्तियाँ

बाइबल में परमेश्वर का अनुग्रह इन विभिन्न तरीकों से प्रकट होता है।

1. दिव्य अनुग्रह
2. दिव्य सामर्थ्य
3. दिव्य स्वभाव

1. दिव्य अनुग्रह

"अनुग्रहकारी और विचारशील होना; कृपा दिखाना";
"क्षमा करना या दया दिखाना";
"कृपा", विशेषकर तब, जब उसकी अपेक्षा न हो या कोई उसके योग्य न हो;
हमारे लिए ऐसे कार्य करना, जिनकी हमने न तो अपेक्षा की हो और न ही हम उनके योग्य हों।
विश्वासियों के रूप में, क्रूस के द्वारा हमें पहले ही दिए गए अनुग्रह के कारण हम परमेश्वर के साथ अनुग्रह की स्थिति में लाए गए हैं। हमें परमेश्वर के साथ उसी अनुग्रह के आधार पर संबंध रखना चाहिए, जो क्रूस के द्वारा हम पर पहले ही प्रकट किया जा चुका है।

रोमियों 5:1,2
1 अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें,
2 जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।

हम परमेश्वर के साथ नियमों, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, तथा धार्मिक कार्यों के आधार पर संबंध रखने की प्रवृत्ति रखते हैं। लेकिन वह हमें दिव्य अनुग्रह और कृपा की दृष्टि से देखता है। हम पहले से ही उसकी स्वीकृति की स्थिति में हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जो हम उसकी स्वीकृति को और अधिक प्राप्त करने के लिए कर सकें।

2. दिव्य सामर्थ्य

परमेश्वर का अनुग्रह हमें स्वाभाविक रूप से हमारी क्षमता या योग्यता से परे कुछ बनने या करने के योग्य बनाता है।
प्रेरित पौलुस कहता है कि वह उसके अनुग्रह के कारण एक सेवक और एक कुशल निर्माणकर्ता बना।

1 कुरिन्थियों 3:10
परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

इफिसियों 3:7
मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ्य के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना।

1 कुरिन्थियों 15:10
परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

3. ईश्वरीय चरित्र

यूहन्ना 1:14
और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

परमेश्वर ने स्वयं को और अपने स्वभाव को—अनुग्रह और सत्य के रूप में—प्रकट किया।

2 पतरस 3:18
पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।

अनुग्रह = यूनानी Charis
Charisma = अनुग्रह के वरदान
Charismatic = अनुग्रह के द्वारा कार्य करने वाला

पवित्र आत्मा के वरदान परमेश्वर के अनुग्रह की अभिव्यक्तियाँ हैं—उसका स्वभाव, जो हम पर और हमारे माध्यम से प्रकट होता है।

परमेश्वर के अनुग्रह के आयाम

(प्रिय टीम, कृपया नीचे दिए गए इस भाग को शीघ्रता से पढ़ लें; इसमें लगभग 10 मिनट लगने चाहिए। आपको पूरा वचन पढ़कर सुनाने की आवश्यकता नहीं है। केवल संदर्भ बताएँ, वचन का सार अपने शब्दों में बताएँ, बहुत संक्षेप में समझाएँ और फिर अगले बिंदु पर आगे बढ़ें। धन्यवाद।)

1. सार्वभौमिक अनुग्रह

हम उसके सार्वभौमिक अनुग्रह के कार्य को केवल देखते रह जाते हैं। परमेश्वर किसी व्यक्ति के अयोग्य होने और जानबूझकर उससे न माँगने के बावजूद भी उस पर अनुग्रह करता है।

निर्गमन 33:19
उसने कहा, "मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा, और तेरे सम्मुख यहोवा नाम का प्रचार करूँगा; और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उसी पर दया करूँगा।"

गलातियों 1:15
परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया,

प्रेरित पौलुस की बुलाहट सार्वभौमिक अनुग्रह के द्वारा हुई थी।

2. प्राप्त किया गया या ग्रहण किया गया अनुग्रह

इफिसियों 2:8
क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है,

उद्धार करने वाला अनुग्रह सभी के लिए उपलब्ध है, लेकिन इसे विश्वास के द्वारा ग्रहण करना आवश्यक है।

याकूब 4:6
वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।"

जीवन की सभी परिस्थितियों और स्थितियों में, उनका सामना करने, उनमें से होकर आगे बढ़ने और उन पर विजय पाने के लिए हम परमेश्वर से आवश्यक अनुग्रह माँग सकते हैं, प्राप्त कर सकते हैं और उसे ग्रहण कर सकते हैं।

3. अनुग्रह और सत्य

Jयूहन्ना 1:14,17
14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
17 इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।

सत्य अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक है, लेकिन अनुग्रह के बिना यह मन में दोष-बोध उत्पन्न करने के बजाय पीड़ा और संताप लाएगा। प्रभु यीशु ने इन दोनों को एक साथ प्रकट किया (उदाहरण: यूहन्ना 5:14, यूहन्ना 8:11)।

अनुग्रह परमेश्वर की करुणा है और सत्य परमेश्वर का न्याय है।
अनुग्रह सत्य से समझौता नहीं करता और न ही उसे अनदेखा करता है। अनुग्रह के साथ सत्य का होना आवश्यक है।

4. अनुग्रह और धार्मिकता

रोमियों 5:20,21
20 व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ,
21 कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।

रोमियों 6:1,2
1 तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?
2 कदापि नहीं! हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएँ?

जहाँ पाप बहुत बढ़ जाता है, वहाँ अनुग्रह उससे भी अधिक बढ़ जाता है। लेकिन यह हमारे लिए पाप में बने रहने का कोई बहाना नहीं है।
अनुग्रह हमें हमारे पापों में स्वीकार करता है, लेकिन अनुग्रह हमें पाप से दूर होकर धार्मिकता की ओर बढ़ने का सामर्थ्य भी देता है। अनुग्रह का अर्थ केवल यह नहीं है कि 'तुम जो चाहो करो और परमेश्वर को उससे कोई समस्या नहीं होगी।'

5. अनुग्रह और कर्म

1 कुरिन्थियों 15:10
परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सबसे बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था।

अनुग्रह हमें कार्य करने का सामर्थ्य देता है।
अनुग्रह हमें आत्मसंतुष्ट, निष्क्रिय, आलसी या उदासीन नहीं बनाता।

6. दिव्य अनुग्रह और कृपा के विशेष समय

एज्रा 9:8
पर अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हम में से कोई कोई बच निकले, और हम को उसके पवित्रस्थान में एक खूँटी मिले, और हमारा परमेश्वर हमारी आँखों में ज्योति आने दे, और दासत्व में हम को कुछ विश्रान्ति मिले।

हमारे जीवन में (व्यक्तिगत रूप से और एक कलीसिया परिवार के रूप में) परमेश्वर के अनुग्रह के विशेष समय हो सकते हैं—ऐसे अवसर, क्षण और द्वार खुलते हैं, जो सामान्यत: सभी को उपलब्ध नहीं होते। हमें इनके प्रति संवेदनशील रहना चाहिए और इनका उचित लाभ उठाना चाहिए।

7. अनुग्रह हमें राज्य करने में सक्षम बनाता है

रोमियों 5:17
क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।

अनुग्रह की बहुतायत और धार्मिकता का वरदान हमें कठिनाइयों, चुनौतियों, समस्याओं और जीवन की परिस्थितियों पर विजय पाने तथा उन पर राज्य करने के लिए उपलब्ध है।

* *(प्रिय टीम, इस भाग में भी आपको पूरा वचन पढ़कर सुनाने की आवश्यकता नहीं है। केवल संबंधित भाग पढ़ें या वचन का सार अपने शब्दों में बताएँ। धन्यवाद।)**

उसका अनुग्रह पर्याप्त है—

1. ईश्वरीय जीवन जीने के लिए

हमारा पवित्रीकरण परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य है। ईश्वरीय जीवन जीने के लिए हमें परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहना चाहिए।

रोमियों 6:14,15

14 तब तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।

15 तो क्या हुआ? क्या हम इसलिये पाप करें कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हैं? कदापि नहीं!

पाप हम पर प्रभुता नहीं कर सकता, क्योंकि अनुग्रह हमें अभक्ति से दूर रहने का सामर्थ्य देता है।

तीतुस 2:11-14

11 क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है,

12 और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएँ;

13 और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें।

14 जिस ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो।

पवित्र आत्मा को *अनुग्रह का आत्मा* कहा गया है (जकर्याह 12:10, इब्रानियों 10:29)।
परमेश्वर के वचन को *अनुग्रह का वचन* कहा गया है (प्रेरितों के काम 14:3, प्रेरितों के काम 20:32)।

इसलिए, परमेश्वर का पवित्र आत्मा और परमेश्वर का वचन वे महत्वपूर्ण साधन हैं (हालाँकि केवल यही एकमात्र साधन नहीं हैं), जिनके द्वारा परमेश्वर हमारे जीवनों में अपना अनुग्रह प्रकट करता है।

पवित्र आत्मा हमें पवित्र करता है (1 पतरस 1:2), हमें मसीह के स्वरूप में रूपांतरित करता है (2 कुरिन्थियों 3:18) और शरीर की अभिलाषाओं को क्रूस पर चढ़ाने के लिए हमें सामर्थ्य देता है।

इसी प्रकार, परमेश्वर का वचन भी हमें पवित्र करता है (यूहन्ना 17:3)।

ईश्वरीय जीवन जीने के लिए हमें विश्वास और परमेश्वर के वचन तथा आत्मा पर निर्भरता के द्वारा उसके अनुग्रह को ग्रहण करना चाहिए। परमेश्वर के अनुग्रह से हमें अपने शरीर को अनुशासन में रखना चाहिए (1 कुरिन्थियों 9:27)।

उसका अनुग्रह पर्याप्त है—
2. प्रलोभन पर विजय पाने के लिए

प्रलोभन एक वास्तविकता है। हम सभी—चाहे जवान हों या बुज़ुर्ग, नए विश्वासी हों या अनुभवी विश्वासी—अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रलोभनों का सामना करते हैं।

इब्रानियों 2:16-18

16 क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन् अब्राहम के वंश को संभालता है।

17 इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित करे।

18 क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दु:ख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है।

इब्रानियों 4:16

इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

उसका अनुग्रह हमें प्रभु के प्रति 'मैं ऐसा करूँगा' और प्रलोभन के प्रति 'मैं ऐसा नहीं करूँगा' कहने के अपने संकल्प को दृढ़ करने में सक्षम बनाता है। अपने अनुग्रह में, वह प्रलोभन से बचने का मार्ग, एक रणनीति और उससे निकलने के रास्ते प्रदान करता है।

उसका अनुग्रह पर्याप्त है—
3. अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए

2 कुरिन्थियों 9:6-8

6 परन्तु बात यह है : जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।

7 हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है।

8 परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे; और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

परमेश्वर अपनी **प्रावधान** को उपलब्ध कराने के लिए हममें अपना अनुग्रह बहुतायत से बढ़ाता है।

उसकी **प्रावधान** सभी बातों में पूरी पर्याप्तता प्रदान करती है, जिससे हर एक भले काम के लिए बहुतायत उत्पन्न होती है।

उसका अनुग्रह पर्याप्त है—
4. सुधारने और सुरक्षा करने के लिए

प्रकाशितवाक्य 3:19

मैं जिन जिन से प्रेम करता हूँ, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूँ; इसलिये सरगर्म हो और मन फिरा।

इब्रानियों 12:5-7,12-15

5 और तुम उस उपदेश को, जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो : "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़।

6 क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।"

7 तुम दु:ख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?

12 इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो,

13 और अपने पाँवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा भटक न जाए पर भला चंगा हो जाए।

14 सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।

15 ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ।

परमेश्वर का ताड़ना देना (प्रेमपूर्ण सुधार और करुणापूर्ण अनुशासन) हमारे प्रति उसके अनुग्रह (प्रेमपूर्ण दयालुता) की एक अभिव्यक्ति है। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि हमें बड़े नुकसान से बचा सके और गलत चुनावों तथा उनके परिणामों से हमारी रक्षा कर सके।

वह अपने अनुग्रह में हमें अनुशासित करता है ताकि,

1) जो लँगड़ा है (जो उस प्रकार कार्य नहीं कर रहा है, जिस प्रकार उसे करना चाहिए), वह जोड़ से न उखड़ जाए (पूरी तरह रुक न जाए)।
2) हम चंगे हो सकें।
3) हम उसके अनुग्रह से रहित न रह जाएँ (स्वयं को परमेश्वर के अनुग्रह से बाहर न कर लें)।
4) हम कड़वाहट से न भरें और अपनी कड़वाहट दूसरों तक न पहुँचाएँ।

उसका अनुग्रह पर्याप्त है—
5. धीरज धरने और विजय प्राप्त करने के लिए

2 कुरिन्थियों 12:7-10

7 इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊँ, मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूँसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊँ।

8 इसके विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार विनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए।

9 पर उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे।

10 इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं में, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूँ; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ।

शैतान का एक दूत पौलुस को सताने के लिए भेजा गया। पौलुस की प्रार्थनाओं के प्रति परमेश्वर का उत्तर यह था कि उसका अनुग्रह उपलब्ध है और पर्याप्त है।

हो सकता है कि हमें परीक्षाओं, चुनौतियों, कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करना पड़े—शायद वे हमारी अपनी ही गलतियों के कारण हों या अन्धकार की शक्तियों के द्वारा उत्पन्न की गई हों। इन सबको सहते हुए उन पर विजय पाने के लिए हमारी पर्याप्तता परमेश्वर के अनुग्रह से ही आती है।

उसके अनुग्रह के द्वारा, उसकी सामर्थ्य हमारी निर्बलताओं में सिद्ध होती है—जब हम असहाय और असुरक्षित होते हैं। तब हम वास्तव में उसकी सामर्थ्य और शक्ति का अनुभव कर सकते हैं और यह घोषणा कर सकते हैं, 'मैं बलवान हूँ', 'हम बलवान हैं'।

सारांश

उसका अनुग्रह पर्याप्त है—
1. ईश्वरीय जीवन जीने के लिए
2. प्रलोभन पर विजय पाने के लिए

3. अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए

4. सुधारने और सुरक्षा करने के लिए

5. धीरज धरने और विजय प्राप्त करने के लिए

जीवन समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

उसका अनुग्रह काफी है

रविवार का उपदेश, 15 नवंबर, 2026

यह जीवन समूह की चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के उपदेश के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन पर चलने वाला बन रहा है और परमेश्वर के पवित्र वचन पर अपना जीवन बना रहा है। जीवन समूह की बैठक सामान्यतः 1.5 से 2 घंटे तक चलेगी। प्रत्येक जीवन समूह में अधिकतम 12-15 लोग होंगे।

तैयारी

जीवन समूह अगुवा: जीवन समूह की बैठक की तैयारी करने के लिए, आप उपदेश सुन सकते हैं या रविवार के उपदेश के नोट्स को दोबारा देख सकते हैं। कृपया जीवन समूह की बैठक के दौरान अपने समूह के लोगों से पूरे उपदेश के नोट्स पढ़ने के लिए न कहें। आपको केवल इतना करना है कि प्रत्येक व्यक्ति से नीचे दिए गए पवित्रशास्त्र के संदर्भों को पढ़वाएँ और फिर नीचे दिए गए प्रश्नों के आधार पर चर्चा, सहभागिता और सीखने का समय आरम्भ करें। ये सभी सामग्री "All Peoples Church Bangalore" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन हमारे उपदेशों के पृष्ठ पर उपलब्ध हैं। जीवन समूह की बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

जीवन समूह की बैठक का आरम्भ प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से किया जा सकता है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के संदर्भों को पढ़े

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

जीवन समूह चर्चा पर आधारित और सहभागितापूर्ण बैठक है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सीख साझा करने का अवसर दिया जाता है। इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें और लोगों को अपनी समझ साझा करने के लिए पर्याप्त समय दें। हम प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान प्रत्येक व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत सीख के नोट्स बनाए।

Q1, क्या हम पवित्रशास्त्र में बताए गए अनुग्रह के आधार पर प्रभु के साथ संबंध रख रहे हैं? चर्चा करें।

Q2, क्या हम अपने जीवन के इन सभी क्षेत्रों के लिए परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त कर रहे हैं? साझा करें।

1. ईश्वरीय जीवन जीने के लिए अनुग्रह

2. प्रलोभन पर विजय पाने के लिए अनुग्रह

3. अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुग्रह

4. सुधारने और सुरक्षा करने के लिए अनुग्रह

5. धीरज धरने और विजय प्राप्त करने के लिए अनुग्रह

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर एक या दो मुख्य बातें साझा कर सकता है और बता सकता है कि वह उन्हें अपने जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों में कैसे लागू करने की योजना रखता है। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और अपनी बात साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करके संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन की यात्रा से जुड़ी कोई बात, वह बात जिसे परमेश्वर उसे सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही या

कोई विशेष चुनौती साझा करे, जिसके लिए वह प्रार्थना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और अपनी बात साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे के लिए प्रार्थना और सेवकाई करके एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें

दो या तीन लोगों के छोटे समूह बनाएँ और बारी-बारी से आज सीखी गई बातों के प्रकाश में परमेश्वर का धन्यवाद करें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की सुनें। अपेक्षा करें कि पवित्र आत्मा के वरदान प्रवाहित हों, चंगाई लाएँ, चमत्कार प्रकट करें, भविष्यवाणी करें, आदि।

फिर से एक साथ एकत्रित हों और निम्नलिखित बातों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1, परिवारों की सुरक्षा और मजबूती के लिए।

2, एक कलीसिया के रूप में हम पर और हमारे माध्यम से हमारे शहर और राष्ट्र के अनेक लोगों को आशीष देने के लिए परमेश्वर के पवित्र आत्मा के सामर्थी उंडेले जाने के लिए। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे शहर और राष्ट्र को बदल सकता है।

3, BUILD TO IMPACT परियोजना के लिए—कि सभी व्यवस्थाएँ अच्छी तरह से पूरी हों, जब हम प्रभु और लोगों की सेवा करने के लिए अपने बाइबल कॉलेज और कलीसिया की सुविधाओं की योजना बनाते और उनका निर्माण करते हैं।

मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए बैठक का समापन करें।